

SHRI K. LAKKAPPA: Certain centrally sponsored schemes have been handed over to the States because of which the States are finding it difficult to mobilise resources. May I know whether the respective Chief Ministers of States have been advised by the Planning Commission to mobilise resources for such schemes? May I know whether any *ad hoc* arrangement has been made by the Planning Commission in this behalf?

SHRI B. R. BHAGAT: So far as the State resources to meet their requirements are concerned, it consists of two parts. One is Central assistance that will be fixed on the basis of the new criterion evolved unanimously by all the Chief Ministers. The balance, which is more important, has to be raised by the States themselves. So, whether the State plan will be big or small, whether it will include all the projects that they want to take up or not will largely depend upon the resources that the States will themselves raise.

SHRI K. LAKKAPPA: That is not my point. I want to know whether any *ad hoc* scheme has been proposed by the Planning Commission, as advised by the Government and the Chief Ministers of the respective States.

SHRI B. R. BHAGAT: There is no *ad hoc* arrangement. The whole question is being considered in the context of the Fourth Five Year Plan.

M. I. Gs

*364. **SHRI RANJIT SINGH:**
DR. SUSHILA NAYAR:

Will the Minister of DEFENCE be pleased to state:

(a) the progress so far made by Government in the manufacture of MIGs;

(b) whether the work is progressing according to the schedule and if not the reasons therefor; and

(c) the time by which it will be possible to have Indian made MIGs ready for use in the country?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI L. N. MISHRA): (a) We have already completed the programme for manufacturing MIG aircrafts from imported assemblies. Their manufacture from Sub-assemblies is in progress.

Manufacture of MIG aircrafts from raw materials which is the last phase of their production programme, will commence in 1971.

(b) The progress is according to schedule.

(c) Deliveries of MIG aircraft manufactured in India from raw materials are expected to commence in 1971.

SHRI RANJIT SINGH: The Minister has stated that the progress is according to schedule. It has been promised earlier that the first aircraft would roll out of this factory, or out of this complex, in 1970. Now he says that it will be in 1971. But we know that it will not be an aircraft manufactured there, but an aircraft assembled there. Now I would like to know from him one thing. Apart from the manufacture of a complete aircraft, we are facing a situation where more than 60 per cent of our MIG fleet already existing is grounded due to lack of spare parts. Will the government first consider the manufacture of spare parts, because of the shortage of which our MIG fleet is largely grounded?

SHRI L. N. MISHRA: Our aircraft is not grounded for want of spares. We have got arrangements for import of spare parts from the Soviet Union. We are getting those spare parts. So far as the manufacture of spare parts is concerned.

SHRI KANWAR LAL GUPTA: Sir, can you understand what he says?

आप मिनिस्टर साहब के बोलने की स्पीड जरा कम करायें। यह भी समझ में नहीं आता है कि वह कौन सी लैंग्वेज में बोल रहे हैं ?

श्री पीलू मोदी : जरा आहिस्ता आहिस्ता बोलिये। आखिर बात दूसरों के समझने के लिए की जानी है।

एक माननीय सदस्य : कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

MR. SPEAKER: He may kindly repeat the answer.

SHRI L. N. MISHRA: So far as the grounding of MIG aircraft is concerned, no MIG is grounded for want of spare parts. We have got spare parts and we have got regular arrangements for getting spare parts from the Soviet Union. So far as the manufacture of spare parts is concerned, we are also having one ancillary unit most-probably at Hyderabad. So long as we do not have our own manufacture, we will get the spare parts from the Soviet Union to keep the MIGS flying.

श्री रणजीत सिंह : अध्यक्ष महोदय, दूसरा प्रश्न मैं हिन्दी में पूछना चाहता हूँ। क्योंकि अंग्रेजी में पूछे गये प्रश्न का उचित उत्तर नहीं आया है। इस मिग एयरक्राफ्ट को बनाने के लिये शुरू में जब रूस से हमारा ऐसीमेंट हुआ तो उन्होंने हमें कम्पलीट एसेम्बलीज भेजने का वादा किया। उस के मुताबिक अब तक हमारे पास हमारी वर्तमान संख्या से पांच मिग स्क्वैड्रन अधिक हो जाने चाहियें थे। पूरी संख्या को बताना तो मंत्री महोदय उचित नहीं समझेंगे। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि कम से जो कम्पलीट एसेम्बली भेजने का वादा किया था क्या वह काम भी शिडयूल के मुताबिक हो रहा है? मंत्री महोदय ने यह कह दिया कि हमारे सब मिग एयरक्राफ्ट मॉडर्न कन्डीशन में हैं कोई आउटडेट नहीं है। क्या वह राजी होंगे कि एक पार्लियामेंटरी एन्क्वायरी कमेटी इस बात की जांच करे ?

श्री ल० न० मिश्र : जहाँ तक एसेम्बली का सवाल है जितने आने चाहियें वे भी आये और हम लोगों ने उस काम को पूरा कर लिया है। माननीय सदस्य ने एन्क्वायरी कराने की बात कही है। एक भी एयरक्राफ्ट आउटडेट नहीं है। जो दो चार परसेंट आउटडेट रहते हैं वे रिपेयर के लिए होते हैं और वह एक रेगुलर बात है : वह कोई एबनार्मल बात नहीं है और न ही कोई चिन्ता की बात है।

श्री रणजीत सिंह : स्पीकर साहब, नाम बड़े और दर्शन छोटे।

एक माननीय सदस्य : किस के ?

श्री रणजीत सिंह : हम बहुत नाम सुनते हैं मिग एयरक्राफ्ट का और बंगलौर फैक्टरी का। मैं उन बदकिस्मत आदमियों में से हूँ जिन्होंने बंगलौर फैक्टरी का देखा है। हम वहाँ बहुत घूँस कर गये थे, लेकिन बहुत मायूस हो कर वापस लौटे। मैं मिलिटरी सीक्रेट को डाइवल्ज नहीं करना चाहता हूँ। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या इस मिग फैक्टरी से कोई अच्छे नतायज निकलेंगे, जो हालात बंगलौर फैक्टरी में हैं, क्या वहाँ पर भी वही हालात तो नहीं दोहराये जायेंगे और जैसे मिग का नाम बढ़ा है, क्या वैसे ही रिजल्ट्स भी एचीव होंगे।

श्री ल० न० मिश्र : मिग बंगलौर में नहीं बनता है। वह नासिक, कं.रापुट और हैदराबाद में बनता है। और बंगलौर में भी ऐसी हालत नहीं है, जिस से चिन्ता हो।

SHRI BAL RAJ MADHOK: The hon. Minister just now said that the assembled MIG-21s would come out in 1971. Very rapid developments are taking place in the field of aircraft manufacture all over the world. May I know whether by the time this MIG-21 will roll out of our Hyderabad factory or assembly, it will not become obsolete? With the changes that are taking place in the international situation and the shift that

is taking place in the Russian policy, that kind of assistance that we expect from Russia may not be forthcoming by that time. In view of these facts may I know whether the Government of India will think of setting up a factory in which indigenous talent will be collected. We have a lot of indigenous aircraft engineers who are working in the USA and other places. I found in the aircraft factory at Seattle that a large number of engineers working there were Indians. May I know whether we can get back all those engineers from there and try to set up a plant in which we can manufacture aircraft suited to Indian conditions and which might also keep pace with the latest developments in this field?

SHRI L. N. MISHRA: It is not that we will have assembly in 1971. The assembly is complete. Some assemblies are in progress. What I said about 1971 was that manufacture from raw materials will commence by 1971.

As to this plane becoming obsolete I may inform the hon. Member that the MIG-21 is not going to be obsolete in 1971 or 1973. However, the question of successor to the MIG-21 is exercising our mind and we are in touch with the Soviet people to have the successor to MIG-21 also.

So far as talent is concerned, I might say that we are trying to utilise Indian talent as far as possible. Even in MIG factories, Indian boys have been trained in Moscow and other places and more than 90 per cent of the people working in the MIG factory are Indians, and even this small number of Soviet people will go away after a year or two.

श्री डा० ना० सिबारी : अध्यक्ष महोदय, श्री प्रसन्न कठिनार्थ है हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स के साथ वह यह है कि उन का प्राइसिंग सिस्टम बहुत डिफिकल्ट है और जो भी मैन्यूफैक्चर होता है उस का दाम बहुत बढ़ जाता है ।

चूँकि उनके यहां कोई प्राइस फिक्स नहीं जितना खर्च होता है प्लस 5 परसेंट या 10 परसेंट वह लोग ज डलें हैं, इसलिये कम्पटीशन की भावना नहीं रहती है और जो उन के यहां विमान बनाते हैं, चूँकि मोनोपोली कंसर्न है, किसी को भी उतने दाम देने ही पड़ते हैं । तो मैं पूछना चाहता हूँ कि आप ने जो मिग असेम्बल किया है वहां से समूचा मंगा कर उस की प्राइम रजा में जो मैन्यूफैक्चर हो कर बिकता है उस से अधिक पड़ती है या कम पड़ती है ? हमारे, जो आप स्पेयर पार्ट्स मैन्यूफैक्चर कर रहे हैं वह आप को वहां से भंगाने में सन्ता पड़ता है या मंहगा पड़ता है और आप की प्राइम उम के कम्पेरिजन में कैसी है ?

श्री ल० ना० मिश्र : यह बात सही है कि कीमतें हवाई जहाज की बढ़ती रही हैं और यह भी माननीय सदस्य का कहना सही है कि जितना का खर्च पड़ता रहता है उतना देना पड़ता है । लेकिन अब एक नई नीति हम लोगों ने अपनाने का निश्चय किया है जिस से हम लोग दाम तय कर देंगे और हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स को उसी दाम पर हवाई जहाज देने होंगे ?

जहां तक कीमत का मवाल है वहां से लाने और यहां बनाने में, मैं उचित नहीं समझता हूँ कि उस के बारे में कुछ कहूँ लेकिन कुछ दिन बाद जब हम ज्यादा संख्या में जहाज बनाने लग जायेंगे तो उस की कीमत घट जायेगी ।

श्री महाराज सिंह भारती : अध्यक्ष महोदय, जो यह मिग 21 हम लोग बना रहे हैं और उस में जो आप ने उत्तर दिए हैं कि इस का जो सक्सेसर होगा उस के लिए आप सोवियट रूस से बात कर रहे हैं, मैं आप से यह जाम 1 चाहता हूँ कि जो आज तेजी के साथ डेवलपमेंट पूरी दुनिया में चल रहा है, जब आप ने मिग की फैक्टरी बनाने के लिए उन से सम्झौता किया था क्या उस वक्त आप ने कोई ऐसा सम्झौता उन से नहीं किया था कि

उनके यहां मिग के डिब्बे डेवलपमेंट होंगे उस डेवलपमेंट को हमें अपनाने की इजाजत होगी और वह हाउस टेकनिकल नो हाउस देंगे ? अगर ऐसा समझौता आपने नहीं किया था तो फिर अब जो आप उन से बात कर रहे हैं क्या किसी ऐसे समझौते के लिए कर रहे हैं ?

श्री ल० ना० मिश्र : समझौते का जहाँ तक सवाल है मिग-21 का जो 1962 में हुआ उस में मिग में जो थे सुधार होंगे बीच में वह सुधार करने की बात तो है और जो नया मिग हम बना रहे हैं उस में बहुत सी ऐसी चीजें हैं जो कि आरिजनाल मिग में ही थीं। उस में अतिव्यय और ईंटरनल को कैपेमिटी है।

जहाँ तक सरकार का सवाल है पुराने समझौते में कोई बात नहीं थी लेकिन अभी हमें इस में कोई दिक्कत हमें नहीं हो रही है।

श्री महाराज सिंह भारती : मैंने यह जानना चाहा था, यह मिग जो है यह 21 है, इसमें पहले 20 था तो क्या होगा अभी तो 21 आया ... (इंटरघान)। आप हाथ क्यों हिला रहे हैं ? चाइना वालों के पास मिग 18 नहीं था ? मेरा सवाल यह है कि यह जो आप ने समझौता किया है, जब रोज डेवलपमेंट होंगे तो मिग के अन्दर जिनकी डेवलपमेंट वह लोग कर रहे हैं क्या उन डेवलपमेंट का फायदा हमें मिलेगा ? या उनको तो हाउस हमें मिलेगा ? यह पैकट आरने किया है या नहीं किया है तो क्या अब करने जा रहे हैं, यह कैटेगोरिकल जवाब मैं चाहता हूँ।

श्री ल० ना० मिश्र : जो हाँ, जो भी सुधार वह कर रहे हैं, वह हमें प्राप्त होता है और उस के मुनाबिक हम भी सुधार कर रहे हैं।

SHRI RANGA: He has not answered it properly at all. He has asked whether you are taking advantage of any developments that are taking place there, whether there is any

such thing in your agreement in order to enable you to get those improvements also made from time to time. The Minister was only saying there are some difficulties and they have not been able to get over them. Why not add your wisdom to it?

SHRI L. N. MISHRA: We are taking advantage of all the modifications and improvements that are being made there.

श्री ल० ना० बनर्जी : जो सवाल प्राप्त हैं उनमें मालूम होता है कि कुछ खतरे हैं जैसा मधोक साहब ने कहा कि मिग-21 जब तक 1971 तक हम तैयार करेंगे तब तक कहीं आबमोलीट तो नहीं हो जाएंगे तो मैं समझता हूँ कि कुछ राजनैतिक लोग भी गलती करने के बाद भी इस देश में आबमोलीट नहीं होते तो यह खतरा तो नहीं है, लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूँ कि 1971 में जो मिग हवाई जहाज बनेगा उस के बाद में हमें कोई बाहर की सहायता की जरूरत नहीं होगी और मिग हवाई जहाज बनाने में हम लोग सेल्फ-सफिशियंट हो जाएंगे ? क्या यह प्राश्वासन वह सदन को दे सकते हैं ?

श्री ल० ना० मिश्र : यह हमने पहले भी कहा कि हमारा मैटीरियल के आधार पर 1971 में बनएंगे। वैसे जहाज तो हम अभी भी बना रहे हैं और काफी संख्या में बना चुके हैं। जहाँ तक सेल्फ सफिशियंट होने की बात है 1971 में जाकर हम मैटीरियल में भी सेल्फ सफिशियंट हो जाएंगे।

श्री शशि भूषण : मन्त्री महोदय से मैं जानना चाहता हूँ कि मिग में जो इम्प्रूवमेंट होने हैं, तरक्की के लिहाज से और जो आप इस वक्त इम्प्रूवमेंट कर रहे हैं हो सकता है कि आप बताना न चाहें लेकिन जब आप इंडिपेंडेंट हो जाएंगे 1971 में उसके बाद भी अपने इम्प्रूवमेंट जारी रखने के लिए आप अपने आप कोशिश करेंगे या फिर भी बाहर से सहायता देने की जरूरत पड़ेगी ?

श्री ल० ना० मिश्र : जहां तक इम्प्रूवमेंट का सवाल है माननीय सदस्य को सूचना होगी कि हमने उसके लिए एक कमेटी बनाई है एयरोनाटिक्स कमेटी जिसके सुब्रह्मण्यम् साहब चेयरमैन हैं वह दस वर्ष में हमारी हवाई शक्ति में क्या क्या आवश्यकता होगी उसको सोच रहे हैं। जहां तक मिग-21 का सवाल है 1971 के बाद इसमें जो भी तरक्की होगी उसके लिए हमारा रूस के साथ समझौता है कि सुधार की सूचना हमें मिलती रहेगी और अगर जरूरत होगी तो हम सुधार करेंगे।

Shri GIRRAJ SARAN SINGH: I would like to have an assurance from the hon. Minister that the aircraft which have already been assembled and gone into squadron service are capable of meeting any threat from Pakistan and China who are equipping themselves with the same type of aircraft or better aircraft.

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI SWARAN SINGH): These aircraft which are being manufactured and which will progressively be manufactured even from indigenous material, as has been mentioned by my colleague, are quite an effective type of aircraft and they are likely to meet the type of threat that we have from Pakistan.

SHRI GIRRAJ SARAN SINGH: My question was this. Are they superior or equivalent to the aircraft held by China and Pakistan?

SHRI SWARAN SINGH: I have already said that they are quite effective to meet the threat that we face.

श्री प्रकाशबीर शास्त्री : श्रीमन्, मैं यह जानना चाहता हूँ कि 1965 के भारत पाकिस्तान संघर्ष में जो काम बंगलौर में बने हुए नेट विमानों ने किया वह काम मिग विमानों ने नहीं किया बल्कि पहले दिन जिस प्रकार से मिग का प्रयोग किया गया उसके कुछ कटु अनुभव भी हुए जिसकी रक्षा

मन्त्रालय को भली प्रकार जानकारी होगी। तो इस प्रकार के छोटे विमान जैसे अरब इजरायल संघर्ष में मिरोज विमानों ने काम किया या 1965 में नेट ने काम किया, इन तमाम विमानों की योजनाओं को ध्यान में रखते हुए और आधुनिकतम विकास की योजनाओं को ध्यान में रखते हुए क्या भारत सरकार इतने बड़े व्यय-साध्य विमानों पर अधिक बल देना चाहती है या उस प्रकार के छोटे लड़ाकू विमानों का अधिक से अधिक उत्पादन देश में हो, इस पर अधिक ध्यान दे रही है ?

SHRI SWARAN SINGH: We intend to pay attention to both.

SHRI MANUBHAI PATEL: One of the reasons for the delay in progress, they say, was that something like 80 tonnes of Russian literature, designs and others, were not being translated in the factory and they had to be sent back to Russia for translation. May I know whether there are some such literature still lying untranslated?

SHRI L. N. MISHRA: There has been no delay in the manufacture of this. So far as translation is concerned, we have our own arrangement for translation.

SHRI D. AMAT: In this connection I would like to draw the attention of the hon. Minister to an article published in the *Engineering Times* of 15th October, 1968, under the caption, "Mig Factory at Koraput in Peril"—the factory at Koraput where supersonic bombers are being manufactured. It is said that saboteurs are lurking in this primitive tract; taking advantage of the backwardness of the people no doubt they will produce strikers instead of producing workers and when we are going to manufacture supersonic planes, they will plan to sabotage the vital defence project. So, I would like to know

whether serious thought has been given to take effective steps to ward off sabotage in this area in the interest of the security of this defence project in these days of threats from enemies.

SHRI L. N. MISHRA: Sir, we have no such complaints of sabotage.

SHRI INDER J. MALHOTRA: Is the hon. Minister in a position to say whether the Soviet Union has offered similar type of aircraft to Pakistan also?

SHRI SWARAN SINGH: No, Sir, We are not in a position to confirm or contradict.

MR. SPEAKER: Question No. 365—Mr. Kothari.

SHRI HEM BARUA: We may also take Question No. 384, Sir....

MR. SPEAKER: Let him answer now.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH): The two Questions are not similar. Question No. 384 deals with China whereas this Question is about Nagas....

MR. SPEAKER: Go ahead now..

SHRI HEM BARUA: Sir, he is mistaken. It is about the Nagas in China coming back with arms and ammunition. Mr. Kothari's question deals with Nagas organising a rebel movement in Upper Burma. The other question deals with Nagas coming from China, entering into the State of Nagaland. It is the same thing, Sir . . .

MR. SPEAKER: Let him answer. Please sit down. Q. No. 365 now. Mr. Kothari.

UNDERGROUND NAGAS, ALLIANCES WITH BURMESE TRIBES

*365. **SHRI S. S. KOTHARI:** Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the underground Nagas have forged a

strong alliance with Kachins, Karens, Tangsas, Noctes and other Burmese tribes inhabiting the lightly administered Upper Burma and that they are coordinating their rebel activities with the outlawed Kachin independent Army of Burma;

(b) if so, Government's reaction thereto; and

(c) the security measures being taken in this regard?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH):

(a) and (b). Government are aware of the collusion between the hostile Nagas and some subversive elements on the other side of the Indo-Burma border. As already indicated in reply to the Lok Sabha Unstarred Question No. 740 answered on the 24th July, 1968, Governments of India and Burma consult with each other on all matters of mutual interest.

(c) The Security forces are maintaining full vigilance on the border in order to deal with lawless elements. On Security considerations, Government have dispensed with the provision which permitted unrestricted movement of tribal people from India and Burma within a belt of 40 Kms on either side of the Indo-Burmese border.

SHRI S. S. KOTHARI: Sir, during the last 15 years, this Government has been seized of the Naga hostiles problem. Would the Minister kindly let us know as to whether any substantial progress has been made with regard to controlling the Naga hostile activities and whether any agreement is in sight?

SHRI SURENDRA PAL SINGH: Does the hon. Member refer to Naga activities on the other side of the border or activities within Nagaland?